Gyanvividha [A Peer Reviewed and Refereed Journal] March 2024 : Year-1, Vol-2 : PP-42-46

ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
March 2024 : 1(2)42-46
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

श्रीमती. सुधा. वी
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
कृष्णम्माल महिला महाविद्यलय
पीलमेडू , कोयम्बत्तूर-641 004

Corresponding Author :
डॉ. श्रीमती. सुधा. वी
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
कृष्णम्माल महिला महाविद्यलय
पीलमेडू , कोयम्बत्तूर-641 004

तमिलनाडू में हिन्दी मौलिख लेखन डॉ.मधू धवन के साहित्य के संदर्भ में

प्रस्तावना:

तमिलनाडू में हिन्दी मौलिख लेखन डॉ.मधू धवन अपने साहित्य में नारी के अनेक रूप वर्णित किए हैं। उनकी रचनाओं में नारी की भावनावों का अलग परिणाम दिखई देता है। वे अपने उपन्यासों तथा कहानियों में नारी को ही लक्ष्य बनाकर लिखते हैं।

लेखक परिचय:

डॉ.मधू धवन के जन्म 22.02.1952 में तरनतारन पंजाब में हुआ था। इनके पिताजी का नाम राजकुमार चैपडा और माताजी का नाम शाकुन्तला रानी है। इनके पिताजी भारत के प्रधान मंत्री जवरहरलाल नेहरू द्वारा सम्मानित किए गए हैं। पिताजी अत्यंत धारमिक होने के कारण रामायण,महाभारत आदि ग्रंतों के पाठ पठन घर में होता था। लेखिका बी.ए एवं एम.ए की डिग्री सन 1967 ई में महारानी कालेज से और पी.एच.डी की डिग्री बैंगलोर विश्वविद्यालय में संपन्न की। इनके साथ ही "डिपलोमा प्रोडूसर" का कोंस अन्नामलै विश्वविद्यालय से सन 1990 में प्राप्त किया। वे चेन्नै की प्रसिद्ध महिला महाविद्यालय स्टेल्ला मेरीस में हिन्दी विभाग के विभागाद्यक्ष रहे।

अध्यापन का अनुभव इनको 33 वर्ष का है। उन्होंने हिन्दी साहित्य के सभी क्षेत्र में सक्रिय रूप में काम करते थे। उन्होंने हिन्दी में कई पुस्तकों का प्रकाशन किए हैं। कई पुरस्कार प्राप्त किए हैं। 'इन्टरनेट का माउस' कहानी संग्रह के लिए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा राष्ट्रिय सम्मान से सम्मानित भी हुए। साहित्य के प्रत्येक विधा पर इनहोंने अपनी लेखनी चलाई हैं।

वे समाज के हित को मन में रखकर रचना लिखते थे। अहिन्दी राज्य में रहकर भी उन्होंने एक साल में आठ पुस्तकों का विमोचन किए हैं। कई विश्वविद्याल के अध्ययन कमिटी के सदस्य रहने के साथ वे एक सफल रचनाकार, संपादक, समाज सेवक, शिक्षाविशारद के रूप में हमारे सामने विकरित होते हैं। उनके कहानियों में भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक रूप से स्थिति को मजबूत करने के विचार और आने वाले दशकों में इसे सार्वधिक शक्तिशाली और अग्रणी देशों में एक बनाने के लिए एक अथक प्रयास किए हैं। उनकी रचनाएं आनेवाली पीढ़ी को राह दिखाती कहानियाँ कई विशयों जैसे भारत के संसाधन, राजनीतिक प्रशासन, आर्थिक विकास, विभिन्न स्तरों पर विकास कार्यक्रम और वैश्वीकरण के प्रभाव का गहन अध्ययन करके नित नई योजनाओं के क्रियान्वन तथा आंकलनों का निरीक्षण करती है।

शोध आलेख:

मधू धवन जी यर्थाथवादी लेखक हैं। उनका मानना है कि आज पर कल खडा होता है। आज के कार्यों के नीव यदी सही होगी तभी कल खुशियों बरा होगा। उनके कहानी संग्रह 'इंटरनेट का मऊस' की कई कहानियाँ जीवन से जुडी हैं। इन कथाओं में लेखक कहीं-कहीं स्थूल कथानक के कैद से मुखत करा अवचेतन मन की गुत्थियाँ सुलझाई और आधुनिक औद्योगिक प्रौद्योगिकी के वातावरण में शहरी जीवन के परिप्रेक्ष्य में अवचेतन मानस की विभिन्न पर्तों को अनावृत कर नई संचेतना के सृजन का एक प्रयास किए हैं।

'खेतां दी मुख गई राखी' इस कहानी में एक ऐसी विधवा महिला 'सौभाग्यवती' के बारे में बताया गया है जो अपने पति के देहांत के बाद पुत्रों को ही अपना जीवन समझती है। बाद में उसे पता चलता है उसे धोखा दिया गया है। बहुएँ उनकी उपेक्षा सोच समझकर करती। जब वह उनके घर आती है तो वे किसी न किसी काम के बहाने निकल जाती। सौभाग्यवती समझती है कि यदि उस जैसी दिलदार तथा धन संपन्ना नारी का यह हाल है तो उनका क्या हाल होगा जो गरीब दुखियारी विधवा का। यह सोचकर उसने एक फैसला कर लिया। उसने बैंक में जमीन गिरवी रख कर्ज ले लिया। वह फरीदाबाद चली गयी और अपने फलैट में रहने लगी। उसने ए.टी.एम का प्रयोग भी सीख लिया। जब उनके बच्चे उसे खोजकर घर आए तो उसने बोल दिया कि आइंदा उनको यहां आने की जरूरत नहीं। उसने एक सेकंड हैंड कार खरीदलिया और एक ड्राईवर भी रख ली। अब वह अपने मन चाहे जीवन जीने लगी।

मधु धवन जी नारी हित के साथ साथ समाज के हित पर भी बल देते हैं। आज के नई पीढी के जवान जीवन दर्शन का अच्छा ज्ञान रखते हैं। इसे केंद्र रखकर उनहोंने अपनी कहानी 'इंटरनेट का माउस' की रचना किया। इस कहानी के दो भाई वैभव और संस्कार यौवन पर पांव रखते ही साईबर युग का बोलबाला छा गया। संस्कार अपने लक्ष्य को सुनिश्चित कर लिया। वह मल्टीनेशनल कंपनियों की सुचारू संरचना करना चाहता था। वैभव की आत्मीयता भले उतनी गहरी न थी। एक दिन दोनों शहर की झील की किनारे भ्रमण पर निकले। वैभव कहता है कि जब भी वह सेल को देखता है तो उसे यौवन का उनमाद आ घेरता है। संस्कार इसे गलत कहता है। उस समय वैभव का सेल बजता है तो वह किशोरीयों के साथ सैर करने के लिए चला जाता है। बारह साल का एक लड़का उनकी ओर हसरत भरी निगाहों से देख रहा था। पिताजी का स्वर सुनकर वह लड़का घबरा गया। पिता ने कहा कि अमीर लड़कों को इस तरह बरबाद करने के लिए समय ही नहीं। इसे सुनकर वैभव की आंखें खुल गया। वह संस्कार को साथ लेकर वहाँ से चला गया।

'विडम्बना' कहानी में रूपाली दत्ता स्वनियोजित महिला है जो अपने बेरोजकार पति को छोड़कर कामकाजी महीला छात्रावास में रहती है। एक दिन उसका पति हाथ में मिट्टी का तेल लेखर उसे घर को बुलाया। वह उसके साथ घर जाने को इनकार कर देती है। पति उसे घर आने को जबरदस्ती करता है तो वहां का वार्डन पुलिस को बुलाती है। कुछ देर में पुलिस आगई और समस्त

कार्रवाई कर उसे गई।

वापस कमरे में आने के बाद रूपाली के मन खिन्नता से बर गयी। आठ साल तक पति का फर्ज उठाती रही और फर्ज पूरा होने के बाद भी वह उसकी फाजीयत करता है। वह सोचती है कि "हर एक कार्यरत औरत पति के लिए कामधेनू है। पत्नी को आत्मनिर्भर करनेवाला पति का जन्म अभी तक इस महान देश में नहीं हुआ है।"

रूढ़िवादी सांस्कृतिक दृष्टिकोण के कारण लड़कियों को अक्सर पाठशाला जाने की अनुमति नहीं दी जाती है। इसका एक कारण गरीबी भी देखा जा सकता है क्योंकि घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण भी माता-पिता अपने सभी बच्चों को शिक्षा देने में असमर्थ होते हैं जिसके कारण वे अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते और लड़कियों को भी अपने साथ मजदूरी पर ले जाना पड़ता है। एक छोटी बच्ची 'सेल्वी' के माधयम से लेखक इस विचार को साबित करते हैं। सेल्वी ग्यारह साल में खूब पढ़नेवाली लड़की है जिसकी माँ विध्वा है। घर को संबालने के लिए वह सेल्वी को पढ़ने से रोक देती है और एक हास्टल में काम करने को अपने साथ ले जाती है। बेचारी सेल्वी सबसे विनती करती है कि उसे पढ़ना है किनतू उसकी कराह को सुननेवाले उस गली में कोई नहीं थे।

मन एक ऐसा कोश है जो कई तरह के विचारों और भावों से भरा है। ' प्रलोभन ' एक ऐसी मानसिक विचार है जो मन को कुछ गलती करने का प्ररणा देता है। मधु धवन जी इस विजार को केंद्र में रखकर एक सुनदर कहानी बनाई है। सेठानी रामदुलारी खूब सजधज कर बाहर आई थी की यकायक गिर गई और वह राम को प्यारी हो गयी। उसकी इकलौता बेटा दिनेश थाईलैंड और कुवैत में रहनेवाली बहनों को फोन कर दिया।

उसने माँ के शरीर से एक भी गहना उतारने से मना कर दिया था। डॉ. कुमार के सहायता से शव को मार्चरी में रखवा कर दिनेश और खुशीराम लौट आए थे। दूसरे दिन पता चला कि रामदुलारी की सारी गहनें चोरी हो गई। दिनेश और खुशीराम इस मामला को बिना बडा करके रामदुलारी की अंतिम संस्कार कर दिए। उन दोनों को डॉ. कुमार पर संदेह हो रहा था। कुमार ने बताया कि एक लड़की रामदुलारी की बेटी बोलकर रात दस मिनिट तक शव के साथ थी। दिनेश को लगा कि वह कहानी गढ़ रहा है। संस्कार होने के बाद दिनेश की पत्नी निश्छला अपनी ननंद के साथ थायलैंड चली गई।

पता चला कि थायलैंड में सुनामी और भूकंप हो गई। थायलैंड को फोन पर संपर्क नहीं हो पाया तो निश्छला की पासपोर्ट निकालने के लिए दिनेश उसकी अलमारी खोला तो देखा कि माँ की सारी गहनें अंदर है। संपर्क करने पर पता चला कि निश्छला की एक आँख फूट गई थी माथे पर गहरी चोट लगी थी। किसी तरह की प्रयत्न करके पिता-पुत्र निश्छला से मिल गए। रोते रोते उसने कहा कि किस तरह उसने सास की मृत देह से गहने उतारे थे और उसकी सजा प्रकृति ने थायलैंड आकर दी है।

हमारा विश्व और हमारा समाज तीव्रगति से बदल रहा है। आज के क्षण में दूसहे क्षण को देखें तो परिवर्तन दिखई देगा। बाजारवाद और वैश्वीकरण, जीवन मूल्यों को निर्णायक होता जा रहा है जिसमें भारतीय समकालीन मूल्यों की खोज कठिन दिखाई देती है। इसी व्यापक आयाम में समकालीन साहित्य में नारी संवेदना का स्वरूप और पक्ष खोजना और निर्धारित करना हमारा उद्देश्य है। 'मैं सृष्टि की आत्मा हूँ' उपन्यास महिमा, मेघना और नेहा नामक तीन बहनों की कहानी है। इस उपन्यास की नाईका महिमा है जो एक आत्मनिर्बर स्त्री है। वह एक नारीवादी कलेक्टर है। महिमा कह माँ अपनी बेटियों को हमेशा दूसरी दर्जा में ही रखती है। महिमा को तीन बेटे हैं क्षितिज, प्रखर और तुषार। वह गैंगस्टरों से नशीली दवाएं जब्त करती है और खुद को एक सफल संग्रहकर्ता साबित करती है। सबी संतानों को ठीक समय पर विवाह करके एक सफल गृहस्ती भी बन जाती है।

एक गृहस्ति के रूप में महिमा अपने परिवार को कैसे आगे बढ़ाती है और एक कलेक्टर के रूप में समाज का उत्थान किस तरह करती है इसे देखकर महिमा की माँ के मन में लड़कीयाँ के ऊपर जो विचार था वह बिलकुल बदल जाता है। वह नारीयों की शक्ति का एहसास करने लगती है।

जब महिमा की पोती ग्रीष्मा दस्वीं कक्षा में प्रांत में प्रथम रैंक प्राप्त किया है तो महिमा की माँ उसे गले लगाकर कहा कि अब उसे पता चल गया कि सृष्टि की आत्मा नारी है और वह आज से बेटा और बेटी को एक ही दर्जा में रखेगी।

इस उपन्यास में लेखिका कई आधुनिक विचारधारी नारीयों को हमारे सामने खडे किए हैं। जब महिमा की ननंद गीता विध्वा हो जाती है तो उसे दुबारा शादी करने का प्रस्ताव रखा जाता है। इस सुझाव को उसकी सास स्वीकार करते हैं और शादी करवाते हैं।

निष्कर्ष:

मधु धवन के रचनाओं में नारीवादी बनी हुई है। यह विचार कहानी ,उपन्यास, नाटक जैसे सबी विधाओं में कहीं ना कहीं प्रकट होती है। उनका साहित्य अधिकांश्यतः महानगर में रहनेवाली शिक्षित एवं कार्यरत महिलाओं के परेशानियों को उद्घाटित करता है मधु धवन जी अपने कुछ रचनाओं में आज के स्तिथि को इस तरह दर्शित करते हैं कि नैतिक मूल्य जैसे संस्कारों पर प्रशन चिन्ह लगा गया है क्योंकि मानवियता को जिंदा दफन दिया गया है। समस्त परिवेश को असंख्य स्वार्थी मूखौटो ने इस कदर दाँप दिया है कि घर बाहर नारी त्रस्त होती जा रही है। मधु धवन जी अपने कहानियों में इस त्रस्त को पश्चाताप का रूप दिया है। नारी की प्रतांडित-चीखती आत्मा आकुल-व्याकुल अपने के हाथों का शिकार बनी विचलित है।

मधु धवन जी के नजरों में वैज्ञानिक युग में नारी की स्थिति मे कई बदलाव आया है। उनको अपने स्वत्व के प्रति जागृत हुई है। आज नारी का अस्तित्व पुरुष वर्चस्व के समान है। शिक्षित होकर नारियों ने अपने घर के पुरुषों का मान बढ़या है। इसका झलक भी अपने कई कहानियों के माध्यम से दर्शित किए हैं।

उनके रचनाओं में पारिवारिक तथा सामाझिक उस चेतना को झकझोर गया है जो आधुनिकता का उस छटम वेश में गुमराह करती है। उनके साहित्य में आज जीवन के मूल्यों को बनाए रखते हुए सतपथ पर चलाना, उनमाद की हिन्साओं से परे दृढ़ संकल्पी, निष्ठावन, बड़प्पनयुक्त, उदारवादी , जीवन के सही राह मिलेगी, जिसकी आज बहूत जरूरत है। वे अपने रचनाओं के माध्यम से अपने अंदर की आग को, इस समाज में रहनेवाली बुरी चिंतच को उसकी पर्दा फाड़कर एक अच्छी राह दिखाए हैं।

वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लिए उनका व्यक्तिगत और कृतित्व, उनकी कृतियों का मूल्यांगन, उनका दृष्टिकोण एक अमूल्य निधि है। इनकी रचनाओं में प्रकृतिप्रेम, राष्ट्रियता, मानवीयता तथा मानव मूल्यों का स्वर मुखरित हुए हैं।

अध्ययन, अध्यापन,पत्रकारिता, साहित्य साधना आदि के माध्यम से अनुभवों व अभिव्यक्ति को नयी धार दी है। हमारे देश में तमाम प्रबद्व महिलाएँ हैं जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में इतिहास रचा है। उसी तरह डॉ. मधु धवन जी ने अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से हर वर्ग को जोडने का प्रयास किया है। वे साहित्य के क्षेत्र में पूर्णिमा के चंद्रमा के समान हैं।

चेन्नै की अपोल्लो हास्पिटल में मधुजी ने अपनी अंतीम सांसें ली। 26 जून 2017 को वे राम के प्यारी बन गयी। उनके निधन से दक्षिण भारत में हिन्दी शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में एक ऐसा शून्य उत्पन्न हुआ है जिसे भर पाना शायद न संभव हो। तमिल भाषी क्षेत्र में हिन्दी का काम करने के लिए वह हिन्दी के साथ द्राविड़ भाषाओं को जोड कर आगे बढ़ी थी और हिन्दी को उसका दर्जा देने के लिए पुरजोर मेहनत करती रही।

वे अपना अधिकतम समय हिन्दी को दिया। हिन्दी के विभिन्न विधाओं में अब तक उनकी 165 पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. डॉ मधु धवन के स्मृति अभिनंदन ग्रंथ' हिन्दी भाषा दक्षिण भारत में हिन्दी'– संपादक: डॉ श्रावणी भट्टाचार्या और डॉ स्वाति पालीवाल- प्रकाशक: वाणी प्रकाशन 4695,21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002-प्रथम संस्करण: 2018

2. तमिल पुत्र कल्कि-डॉ मधु धवन-प्रकाशक: वाणी प्रकाशन 4695,21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002-प्रथम संस्करण:2017
3. शिखरों से ऊंचा-डॉ मधु धवन-प्रकाशक: पेनमैन पब्लिशर्स , 7309/5 , प्रेम नगर, दिल्ली -110 007 -प्रथम संस्करण: 2000
4. चिंगारीयाँ-डॉ मधु धवन-प्रकाशक: वाणी प्रकाशन 4695,21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002-प्रथम संस्करण:2017
5. झरते अश्रृ डॉ मधु धवन-प्रकाशक: वाणी प्रकाशन 4695,21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
6. मै सृष्टि की आत्मा हूँ-डॉ मधु धवन-प्रकाशक: वाणी प्रकाशन 4695,21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
7. साईबर माँ-डॉ मधु धवन-प्रकाशक: नेश्नल पब्लिशिंग हाउस 4230/1, अंसारी रोड, धरिया गंज, दिल्ली-110 002 -प्रथम संस्करण 2004
8. भारत कहाँ जा रहा है-डॉ मधु धवन-प्रकाशक: वाणी प्रकाशन 4695,21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002-प्रकाशित वर्षः 2016
9. उस मोड पर-उपन्यास-पेनमैन पब्लिशर्स, 7309/5, प्रेम नगर, शक्ति नगर, दिल्ली
10. आज की पुकार- डॉ मधु धवन-प्रकाशक: वाणी प्रकाशन 4695,21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002-प्रकाशन वर्ष: 2014
11. डॉ मधु धवन: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, अंबुजा एन.मलखेडकर, गुलबर्गा विश्व विद्यालय, कर्नाटक